

रविवार 18 अक्टूबर, 2026

विषय — प्रायश्चित का सिद्धांत

स्वर्ण पाठ: मत्ती 28: 20

"देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ॥"
—मसीह यीशु

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 139: 1-4, 7-10

- ¹ हेयहोवा, तू ने मुझे जांच कर जान लिया है॥
- ² तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है।
- ³ मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है।
- ⁴ हे यहोवा, मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो।
- ⁷ मैं तेरे आत्मा से भाग कर किधर जाऊँ? वा तेरे साम्हने से किधर भागूँ?
- ⁸ यदि मैं आकाश पर चढ़ूँ, तो तू वहां है! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊँ तो वहां भी तू है!
- ⁹ यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़ कर समुद्र के पार जा बसूँ,
- ¹⁰ तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा, और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 41: 10

- ¹⁰ मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ; मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्हाले रहूंगा॥

2. उत्पत्ति 28: 10-13 (से :), 15-19 (से :), 20, 21

- ¹⁰ सो याकूब बेशेबा से निकल कर हारान की ओर चला।
- ¹¹ और उसने किसी स्थान में पहुंच कर रात वहीं बिताने का विचार किया, क्योंकि सूर्य अस्त हो गया था; सो उसने उस स्थान के पत्थरों में से एक पत्थर ले अपना तकिया बना कर रखा, और उसी स्थान में सो गया।
- ¹² तब उसने स्वप्न में क्या देखा, कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुंचा है: और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं।

- 13 और यहोवा उसके ऊपर खड़ा हो कर कहता है, कि मैं यहोवा, तेरे दादा इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूं: जिस भूमि पर तू पड़ा है, उसे मैं तुझ को और तेरे वंश को दूंगा।
- 15 और सुन, मैं तेरे संग रहूंगा, और जहां कहीं तू जाए वहां तेरी रक्षा करूंगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊंगा: मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूं तब तक तुझ को न छोड़ूंगा।
- 16 तब याकूब जाग उठा, और कहने लगा; निश्चय इस स्थान में यहोवा है; और मैं इस बात को न जानता था।
- 17 और भय खा कर उसने कहा, यह स्थान क्या ही भयानक है! यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन यह स्वर्ग का फाटक ही होगा।
- 18 भोर को याकूब तड़के उठा, और अपने तकिए का पत्थर ले कर उसका खम्भा खड़ा किया, और उसके सिरे पर तेल डाल दिया।
- 19 और उसने उस स्थान का नाम बेतेल रखा; पर उस नगर का नाम पहिले लूज था।
- 20 और याकूब ने यह मन्त्रत मानी, कि यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहिनने के लिये कपड़ा दे,
- 21 और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊं: तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा।

3. उत्पत्ति 32: 1, 2 (से :), 3, 6, 7 (से :), 24-30

- 1 याकूब ने भी अपना मार्ग लिया और परमेश्वर के दूत उसे आ मिले।
- 2 उन को देखते ही याकूब ने कहा, यह तो परमेश्वर का दल है सो
- 3 तब याकूब ने सेईर देश में, अर्थात् एदोम देश में, अपने भाई ऐसाव के पास अपने आगे दूत भेज दिए।
- 6 वे दूत याकूब के पास लौट के कहने लगे, हम तेरे भाई ऐसाव के पास गए थे, और वह भी तुझ से भेंट करने को चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है।
- 7 तब याकूब निपट डर गया, और संकट में पड़ा:
- 24 और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरुष आकर पह फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा।
- 25 जब उसने देखा, कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जांघ की नस को छूआ; सो याकूब की जांघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई।
- 26 तब उसने कहा, मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ चाहता है; याकूब ने कहा जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा।
- 27 और उसने याकूब से पूछा, तेरा नाम क्या है? उसने कहा याकूब।
- 28 उसने कहा तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध कर के प्रबल हुआ है।
- 29 याकूब ने कहा, मैं बिनती करता हूं, मुझे अपना नाम बता। उसने कहा, तू मेरा नाम क्यों पूछता है? तब उसने उसको वहीं आशीर्वाद दिया।
- 30 तब याकूब ने यह कह कर उस स्थान का नाम पनीएल रखा: कि परमेश्वर को आम्हने साम्हने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है।

4. भजन संहिता 119: 76, 77, 80

- 76 मुझे अपनी करुणा से शान्ति दे, क्योंकि तू ने अपने दास को ऐसा ही वचन दिया है।

- 77 तेरी दया मुझ पर हो, तब मैं जीवित रहूंगा; क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूँ।
80 मेरा मन तेरी विधियों के मानने में सिद्ध हो, ऐसा न हो कि मुझे लज्जित होना पड़े॥

5. 1 कुरिन्थियों 3: 9-11, 16, 21, 23

- 9 क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।
10 परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्री की नाई नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है; परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।
11 क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता।
16 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?
21 इसलिये मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है।
23 और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है॥

6. 2 कुरिन्थियों 6: 16-18

- 16 और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे।
17 इसलिये प्रभु कहता है, कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा।
18 और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है॥

7. इब्रानियों 13: 1, 2, 5, 6, 20, 21

- 1 भाईचारे की प्रीति बनी रहे।
2 पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इस के द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है।
5 तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष किया करो; क्योंकि उस ने आप ही कहा है, कि मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।
6 इसलिये हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है॥
20 शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुआओं में से जिला कर ले आया।
21 तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिस से तुम उस की इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उस को भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे, जिस की बड़ाई युगानुयुग होती रहे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 465: 14-15, 17 (सिद्धांत)-4

ईश्वर के गुण न्याय, दया, ज्ञान, भलाई, और इतने पर हैं।

सिद्धांत और उसका विचार एक है, और यह एक ईश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी होने के नाते है, और उसका प्रतिबिंब मनुष्य और ब्रह्मांड है। ओमनी को लैटिन विशेषण के संकेत से अपनाया गया है। इसलिए भगवान सभी-शक्ति या सामर्थ्य, सभी-विज्ञान या सच्चे ज्ञान, सभी-उपस्थिति को जोड़ती है।

2. 303: 25-15

ईश्वर, स्वयं की छवि और समानता के बिना, एक गैर-बराबरी, या मन अप्रभावित होगा। वह अपने स्वयं के स्वभाव के गवाह या सबूत के बिना होगा। आध्यात्मिक मनुष्य ईश्वर की छवि या विचार है, एक ऐसा विचार जो न तो खो सकता है और न ही अपने ईश्वरीय सिद्धांत से अलग हो सकता है। जब भौतिक ज्ञान के प्रति अनुभूतियां हुईं, तब प्रेरितों ने यह घोषणा की कि कुछ भी उसे ईश्वर, मीठे भाव और जीवन और सत्य की उपस्थिति से अलग नहीं कर सकता।

यह ज्ञान और असत्य विश्वास है, भौतिक वस्तुओं पर आधारित है, जो आध्यात्मिक सौंदर्य और गुडई को छिपाते हैं। यह समझ में आया, पॉल ने कहा: "न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊंचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, ...अलग कर सकेगी॥" अलग कर संभव है। " यह क्रिश्चियन साइंस का सिद्धांत है: उस दिव्य प्रेम को उसकी अभिव्यक्ति, या वस्तु से वंचित नहीं किया जा सकता है; वह आनन्द दुःख में नहीं बदल सकता, क्योंकि दुःख आनन्द का स्वामी नहीं है; वह अच्छाई कभी स्पष्ट नहीं कर सकता; वह पदार्थ कभी भी मन उत्पन्न नहीं कर सकता है और न ही जीवन का परिणाम मृत्यु है। पूर्ण पुरुष - भगवान द्वारा शासित, उनका सिद्ध सिद्धांत - पाप रहित और शाश्वत है।

3. 336: 25 (ईश्वर)-31

भगवान, मनुष्य का दिव्य सिद्धांत, और भगवान की समानता में आदमी अविभाज्य, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत हैं। विज्ञान पूर्णता के नियम को प्रस्तुत करता है, और अमरता को प्रकाश में लाता है। भगवान और मनुष्य एक ही नहीं हैं, लेकिन ईश्वरीय विज्ञान, ईश्वर और मनुष्य के सह-अस्तित्व के क्रम में और शाश्वत हैं। ईश्वर माता-पिता का मन है, और मनुष्य ईश्वर की आध्यात्मिक संतान है।

4. 251: 15-27

हमें सीखना चाहिए कि मानव जाति शरीर को कैसे संचालित करती है, - चाहे वह स्वच्छता में विश्वास के माध्यम से हो, दवाओं में या इच्छाशक्ति में। हमें यह सीखना चाहिए कि क्या वे बीमारी और मृत्यु, पाप और क्षमा की आवश्यकता में विश्वास के माध्यम से शरीर पर शासन करते हैं, या इसे उच्च समझ से नियंत्रित करते हैं कि दिव्य मन सही बनाता है, तथाकथित मानव मन सत्य के माध्यम से कार्य करता है, मानव का नेतृत्व करता है मन को सभी त्रुटि से मुक्त करने के लिए, दिव्य मन को एकमात्र मन, और पाप, बीमारी, मृत्यु का मरहम लगाने वाले को खोजने के लिए। उच्च आध्यात्मिक समझ की यह प्रक्रिया मानव जाति में सुधार करती है जब तक कि त्रुटि गायब नहीं हो जाती है, और कुछ भी नहीं बचा है जो कि नाश होने या दंडित होने के योग्य है।

5. 205: 32-3

जब हम दिव्य के साथ अपने संबंध को पूरी तरह से समझते हैं, तो हमारे पास कोई अन्य मन नहीं हो सकता है, लेकिन उनका - कोई अन्य प्रेम, ज्ञान, या सत्य, जीवन का कोई अन्य अर्थ नहीं है, और पदार्थ या त्रुटि के अस्तित्व की कोई चेतना नहीं है।

6. 308: 14-23

आत्मा से प्रेरित पितृपुरुषों ने सत्य की आवाज सुनी, और भगवान के साथ सचेत रूप से बात की जैसे कि आदमी आदमी के साथ बात करता है।

जैकब अकेला था, त्रुटि के साथ कुशती, - जीवन, पदार्थ और बुद्धिमत्ता की एक नश्वर भावना से जूझते हुए, अपने झूठे सुख और पीड़ा के साथ अस्तित्व के रूप में, - जब एक दूत, सत्य और प्रेम का एक संदेश, उसे दिखाई दिया और मुस्कुराया पाप, या शक्ति, उसकी त्रुटि की, जब तक कि उसने इसकी असत्यता को नहीं देखा; और सत्य, इस प्रकार समझा जा रहा है, उसे दिव्य विज्ञान के इस पेनेल में आध्यात्मिक शक्ति प्रदान की।

7. 309: 7 (यह)-16

इस प्रकार जैकब के संघर्ष का परिणाम सामने आया। उन्होंने आत्मा की आध्यात्मिक शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति के साथ भौतिक त्रुटि पर विजय प्राप्त की थी। इससे आदमी बदल गया। उन्हें अब याकूब नहीं कहा जाता था, लेकिन इज़राइल, - भगवान का एक राजकुमार, या भगवान का एक सैनिक, जिसने एक अच्छी लड़ाई लड़ी थी। उन्हें उन लोगों का पिता बनना था, जिन्होंने ईमानदारी से प्रयास करके भौतिक इंद्रियों पर आत्मा की शक्ति के प्रदर्शन का अनुसरण किया; और पृथ्वी के बच्चे जिन्होंने उसके उदाहरण का अनुसरण किया, उन्हें इज़राइल के बच्चे कहा जाना चाहिए, जब तक कि मसीहा उनका नाम नहीं बदल देता।

8. 296: 4 (प्रगति)-6, 14-18, 28-30

प्रगति अनुभव से पैदा होती है। यह नश्वर मनुष्य का पकना है, जिसके माध्यम से नश्वर को अमर के लिए गिरा दिया जाता है।

तथाकथित सुख और पदार्थ की पीड़ा नष्ट हो जाती है, और उन्हें सत्य, आध्यात्मिक ज्ञान और होने की वास्तविकता के दोष के तहत बाहर जाना चाहिए। नश्वर विश्वास को उनके साथ भाग लेने के लिए त्रुटि और पाप में सभी संतोष खोना चाहिए।

एक बेहतर विश्वास गलती से एक कदम दूर है, और अगला कदम उठाने और क्रिश्चियन साइंस में स्थिति को समझने में मदद करता है।

9. 297: 12 (गलत)-19

गलत विश्वास सत्य से नष्ट हो जाता है। सबूत बदल दो, और जो पहले इस झूठे विश्वास के लिए वास्तविक लगता था, वह गायब हो जाएगा, और मानव चेतना और ऊपर उठ जाएगी। इस तरह होने की वास्तविकता मिल जाती है और मानव अमर हो जाता है। किसी भी भौतिक अवधारणा के बारे में एकमात्र तथ्य यह है कि यह न तो वैज्ञानिक है और न ही शाश्वत, किन्तु परिवर्तन और विघटन के अधीन है।

10. 292: 27-31

यह भौतिक मानसिकता, गलत दिमाग, नश्वर है। इसलिए मनुष्य का सर्वनाश होगा, क्या यह आध्यात्मिक वास्तविक मनुष्य के अपने ईश्वर के साथ अविवेकी संबंध के लिए नहीं था, जिसे यीशु ने प्रकाश में लाया था।

11. 114: 23-29

क्रिश्चियन साइंस मानसिक के रूप में सभी कारणों और प्रभाव को बताता है, शारीरिक नहीं। यह आत्मा और शरीर से रहस्य का पर्दा उठाता है। यह भगवान के लिए मनुष्य के वैज्ञानिक संबंध को दर्शाता है, जा रहा है की अंतरनिहित अस्पष्टताओं को हटा देता है, और कैद किए गए विचारों को मुक्त करता है। दिव्य विज्ञान में, मनुष्य सहित ब्रह्मांड, आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है।

12. 91: 5-8

आइए हम खुद को इस विश्वास से मुक्त करें कि मनुष्य ईश्वर से अलग हो जाता है, और केवल ईश्वरीय सिद्धांत, जीवन और प्रेम का पालन करता है। यहाँ सभी सच्चे आध्यात्मिक विकास के लिए प्रस्थान का महान बिंदु है।

13. 316: 3-7

विज्ञान को उसके निर्माता से जोड़ा जा रहा असली आदमी, नश्वर को केवल पाप से मोड़ने की जरूरत है और मसीह, वास्तविक व्यक्ति और भगवान के साथ उसके संबंध को खोजने के लिए और दिव्य पुत्रत्व को पहचानने के लिए नश्वर स्वार्थ की दृष्टि खोना चाहिए।

14. 306: 18 (आदमी)-20

...मनुष्य ईश्वर से एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकता, यदि मनुष्य ईश्वर को प्रतिबिंबित करता है। इस प्रकार विज्ञान मनुष्य के अस्तित्व को अक्षुण्ण सिद्ध करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मेरी बेकर एंडी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठीसुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6